mardi 20 mars 2012

HIN2B09b

(Compréhension de l'écrit)

Cours –7

सभ्यता, राजनीति और गंगा - अजय सिंह

सैकड़ों करोड़ रुपये गंगा की सफ़ाई पर लगाने के बाद भी नदी आज पहले से न सिर्फ़ ज्यादा दूषित है, बल्कि लुप्तप्राय सी भी है। गंगा एक्शन प्लान के नाम पर सैकड़ों करोड़ बहाने के बाद भी नदी संरक्षण का कार्य हुआ ही नहीं है। यह पैसा भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गया। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि सभ्यता का उद्गम स्थल यह नदी भारतीय सामाजिक और राजनीतिक जीवन के प्रदूषण का प्रतिबिंब हो।

राजू का जन्म बनारस में हुआ। पेशे से वह घोसी है। गाय-भैंस पालना और उनका दूध बेचना ही उसने सीखा। सुबह तड़के अस्सी घाट पर चहलकदमी के बाद वह अपने काम में लग जाता है। वर्षो से उसकी यही दिनचर्या है। गंगा नदी से उसका रोज का नाता है। रोज सूरज का निकलना देखकर अपने काम पर जाने से ही उसके दिन की शुरुआत होती है। ...जीवन के गूढ़ रहस्य को इसी घाट पर उसने जाना और समझा है। सुबह चार बजे से ही इन घाटों पर लोगों का जमावड़ा लग जाता है। लोग श्रद्धा के साथ डुबकी लगाते हैं। जीवन की नयी आशा लिये ये श्रद्धालु इस बात से बेखबर हो जाते हैं कि बगल के घाट में जीवन की अंतिम क्रिया का प्रसंग अनवरत चल रहा है। बड़ा ही दिलचस्प है बनारस के विभिन्न घाटों में जीवन के विभिन्न पहलुओं का दर्शन।

राजू न तो आधुनिकता से प्रभावित है और न ही बनारस छोड़ कर कहीं जाना चाहता है। काशी में उसका मन रमा है। पर आजकल वह बनारस के हजारों नागरिकों की तरह दुखी है। वजह है गंगा नदी का दिनों-दिन दूषित होना। ... सच में वाराणसी में गंगा की स्थिति लगभग किसी नाले की तरह हो गयी है। दशाश्वमेध घाट और अस्सी घाट के बीच में सीवेज का प्रवाह खुलेआम हो रहा है। नदी की धारा लगभग समाप्त सी हो गयी है। जगह-जगह पर जानवर और इंसान के कंकाल आपको तैरते मिल जायेंगे। सैकड़ों करोड़ रुपये गंगा की सफ़ाई पर लगाने के बाद भी नदी आज पहले से न सिर्फ़ ज्यादा दूषित है, बल्कि लुप्तप्राय सी भी है।

उत्तराखंड की पहाड़ियों से मैदानी क्षेत्र में आने के बाद गंगा की स्थिति कमोबेश ऐसी ही है। लगभग तीन महीने पहले की सीएजी की एक रिपोर्ट चौंकाने वाली है। पिछले साल कुंभ मेले के दौरान उत्तराखंड सरकार ने गंगा में बड़ी मात्रा में सीवेज गिराया। यह काम किया धार्मिक आस्था का राजनीति में इस्तेमाल करने की सिद्धहस्त भाजपा सरकार ने।...तीर्थयात्रियों को इस बात का अंदेशा ही नहीं था कि जिस जल को वे अमृत समझ रहे हैं, वह सीवेज डिस्चार्ज है।... गंगा की इस दुर्दशा पर स्वामी निगमानंद नामक एक संन्यासी ने अनशन कर अपनी जान भी दे दी।

यह सच है कि गंगा की दुर्दशा उत्तर प्रदेश में आने के बाद बढ़ती जाती है। गंगा एक्शन प्लान के नाम पर सैकड़ों करोड़ रुपये बहाने के बाद भी नदी संरक्षण का कार्य हुआ ही नहीं है। जाहिर है यह पैसा भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गया। यही वजह है कि उत्तर प्रदेश में ...गंगा में प्रदूषण निर्बाध गति से चलता रहता है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि सभ्यता का उद्गम स्थल यह नदी भारतीय सामाजिक और राजनीतिक जीवन के प्रदूषण का एक प्रतिबिंब हो।

सही मायनों में गंगा उत्तरी भारत की जीवनधारा है। अगर उत्तर प्रदेश में ही देखें तो गढ़मुक्तेश्वर, मुरादाबाद, कानपुर, इलाहाबाद और वाराणसी तक बसे शहरों में गंगा नदी से संबंधित कई संस्कृतियां और जीवन पद्धतियां जुड़ी हुई हैं । गढ़मुक्तेश्वर का मेला हर साल लाखों लोगों को नदी के तट पर लाता है। इसी तरह मुरादाबाद, कानपुर और इलाहाबाद में कई छोटे-छोटे धार्मिक व सांस्कृतिक उत्सव गंगा के घाट पर होते हैं। और गंगा की यह महत्ता सिर्फ़ उत्तर भारत तक सीमित नहीं है।

आज के दिन इलाहाबाद में गंगा अपने पराभव के निम्न चरण में है। ऐसी ही हालत कानपुर और इलाहाबाद की है, जहां लाखों मल्लाहों के जीवन यापन का साधन गंगा ही थी। कई बार छोटे-छोटे जनांदोलन भी हुए, जिसे नजरअंदाज कर दिया गया। बनारस में तो नदी की सफ़ाई के नाम पर लिया गया स्टीमर भी ज्यादातर पर्यटन के कार्यो में इस्तेमाल होता है। यही वजह है कि गंगा की मुख्य धारा में जैसे ही आप जायें तो नरकंकाल का सामना होना आम बात है। नदी की मुख्यधारा इतनी दूषित हो गयी है कि लगता है मानो कोई नाला बह रहा है।

गंगा का लुप्त होना एक सभ्यता के अंत होने जैसा होगा। इसके प्रदूषित और लुप्तप्राय होने से निशंक और उमा भारती जैसे नेताओं का सरोकार अपने राजनीतिक स्वार्थ का होगा। लेकिन बनारस में रह रहे राजू और हरिद्वार में अपनी जान तक दे देने वाले स्वामी निगमानंद का इस नदी से ओत्मक नाता रहा है। नि:संदेह गंगा का संरक्षण भारतीय सभ्यता का संरक्षण होगा।

Vocabulaire

सैकड़ा-m centaine
करोड़-m 10 000 000
दूषित pollué
लुप्तप्राय presque disparu
संरक्षण-m préservation, protection
भ्रष्टाचार-m corruption
सभ्यता-f civilisation
उद्गम-m source
प्रदूषण-m pollution
प्रतिबिंब-m reflet
पेशा-m profession
घोसी-m vacher, bouvier
तड़के tôt le matin
चहलकदमी-f flânerie, faire une ballade
दिनचर्या-f progamme du jour
शुरुआत-f début
गूढ़ profond
रहस्य-m mystère
जमावड़ा-m rassemblement
डुबकी-f plongeon
श्रद्धालु-m dévot
बेखबर oublieux, insouciant
अंतिम क्रिया-f dernier rite (de décès)
प्रसंग-m contexte
अनवरत incessant
विभिन्न divers
पहलू-m aspect, face
मन रमना s'y plaire
नागरिक-m citoyen
लगभग approximativement
नाला-m canal, égout
प्रवाह flot
खुलेआम ouvertement
कंकाल-m squelette
पहाड़ी-f colline
मैदान-m plaine
कमोबेश plus ou moins
चौंकाना étonner, faire sursauter
मात्रा-f quantité
सिद्धहस्त expert
अंदेशा-m doute, crainte
अमृत-m nectar
अनशन-m jeûne
दुर्दशा-f détresse
निर्बाध sans obstacle
मायना sense
पद्धति-f système, méthode
मेला-m foire
महत्ता grandeur
सीमित limité
निम्न inférieur
चरण-m étape, phase
मल्लाह-m matelot
जीवन यापन le fait de gagner sa vie
साधन-m moyen
नजरअंदाज करना ignorer
सरोकार-m affaire, intérêt
स्वार्थ-m intérêt égoïste
ओत्मक avantageux, bénéfique
नाता-m relation, lien
नि:संदेह sans doute